

रविवार 28 नवंबर, 2019

विषय — धन्यवाद

स्वर्ण पाठ: लूका 12 : 32

"हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।"

उत्तरदायी अध्ययन: I इतिहास 16 : 23-30

- 23 हे समस्त पृथ्वी के लोगो यहोवा का गीत गाओ। प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रही।
- 24 अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और देश देश के लोगों में उसके आश्चर्य-कर्मों का वर्णन करो।
- 25 क्योंकि यहोवा महान और स्तुति के अति योग्य है, वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।
- 26 क्योंकि देश देश के सब देवता मूर्तिर्या ही हैं; परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है।
- 27 उसके चारों ओर वैभव और ऐश्वर्य है; उसके स्थान में सामर्थ और आनन्द है।
- 28 हे देश देश के कुलो, यहोवा का गुणानुवाद करो, ।
- 29 यहोवा की महिमा और सामर्थ को मानो। यहोवा के नाम की महिमा ऐसी मानो जो उसके नाम के योग्य है। भेंट ले कर उसके सम्मुख आओ, पवित्रता से शोभायमान हो कर यहोवा को दण्डवत करो।
- 30 हे सारी पृथ्वी के लोगो उसके साम्हने थरथराओ! जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 100 : 1-5

- 1 हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
- 2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 3 निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं॥
- 4 उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
- 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

2. | इतिहास 16 : 8, 10

- 8 यहोवा का धन्यवाद करो, उस से प्रार्थना करो; देश देश में उसके कामों का प्रचार करो।
- 10 उसके पवित्र नाम पर घमंड करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो।

3. यशायाह 58 : 11

- 11 और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।

4. लूका 10 : 1, 17-21

- 1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।
- 17 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।
- 18 उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।
- 19 देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।
- 20 तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं॥

5. लूका 17 : 11-19

- 11 और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था।
- 12 और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले।
- 13 और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर।
- 14 उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपने तई याजकों को दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए।

- 15 तब उन में से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूं, ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा।
- 16 और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था।
- 17 इस पर यीशु ने कहा, क्या दसों शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहां हैं?
- 18 क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता?
- 19 तब उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है॥

6. | पतरस 5 : 6, 7

- 6 इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।
- 7 और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।

7. | थिस्सलुनीकियों 5 : 16-18

- 16 सदा आनन्दित रहो।
- 17 निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो।
- 18 हर बात में धन्यवाद करो: क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 151 : 23-24

वह दिव्य मन जिसने मनुष्य को अपनी छवि और समानता बनाए रखी।

2. 7 : 23 (वही)-26

"दिव्य कान" श्रवण तंत्रिका नहीं है। यह सर्व-श्रवण और सर्व-ज्ञान मन है, जिनके लिए मनुष्य की प्रत्येक आवश्यकता को हमेशा जाना जाता है और जिनके द्वारा इसकी आपूर्ति की जाएगी।

3. 2 : 23-25, 26 (करेगा)-28

भगवान प्यार है। क्या हम उसे और अधिक होने के लिए कह सकते हैं? ईश्वर बुद्धि है। क्या हम उस अनंत मन को सूचित कर सकते हैं जो वह पहले से ही समझ नहीं पाया है?... क्या हम खुले फव्वारे में और अधिक की याचना करेंगे, जिसे हम स्वीकार करने की तुलना में अधिक डाल रहे हैं?

4. 3 : 17-2

देवता की हमारी अवधारणाएँ कितनी खाली हैं! हम सैद्धांतिक रूप से स्वीकार करते हैं कि ईश्वर अच्छा, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, अनंत है, और फिर हम इस अनंत मन को जानकारी देने की कोशिश करते हैं। हम अनारक्षित क्षमा के लिए और लाभ के उदारवादी बहिष्कार की याचना करते हैं। क्या हम वास्तव में पहले से ही प्राप्त अच्छे के लिए आभारी हैं? फिर हम अपने आप को प्राप्त आशीर्वादों का लाभ उठाएँगे, और इस तरह अधिक प्राप्त करने के लिए फिट होंगे। कृतज्ञता धन्यवाद की एक मौखिक अभिव्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक है। काम भाषण की तुलना में अधिक आभार व्यक्त करता है।

यदि हम जीवन, सत्य और प्रेम के लिए कृतघ्न हैं, और इसलिए हम सभी के आशीर्वाद के लिए भगवान का धन्यवाद करते हैं, हम निष्ठावान हैं और तीखे शब्दों को अपने ऊपर लेते हैं जो हमारे मास्टर कपटी लोगों को कहते हैं। ऐसे मामले में, होंठ पर उंगली रखने के लिए एकमात्र स्वीकार्य प्रार्थना है, और जो आशीर्वाद हमें मिला है, उसे याद रखो। जबकि हृदय ईश्वरीय सत्य और प्रेम से दूर है, हम बंजर जीवन की अकर्मण्यता को छिपा नहीं सकते।

5. 9 : 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

6. 94 : 17-23

सत्य की प्रगति उसके दावों की पुष्टि करती है, और हमारे मास्टर ने उनके कामों से उनके शब्दों की पुष्टि की। उनकी उपचार-शक्ति ने कामुकता से उत्पन्न होने वाले इनकार, अकर्मण्यता और विश्वासघात को नष्ट कर दिया। जिन दस कोढ़ियों ने यीशु को चंगा किया, उनमें से केवल एक ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए लौटा, — इसका मतलब है, उस दिव्य सिद्धांत को स्वीकार करने के लिए लौटा जिसने उसे चंगा किया था।

7. 54 : 1-7

अपने मानव जीवन की परिमाण के माध्यम से, उन्होंने दिव्य जीवन का प्रदर्शन किया। अपने शुद्ध स्नेह के आयाम से, उन्होंने प्यार को परिभाषित किया। सत्य के मिलन के साथ, उन्होंने त्रुटि को समाप्त कर दिया। इसे देखकर नहीं; दुनिया ने उसकी धार्मिकता को स्वीकार नहीं किया, लेकिन पृथ्वी को सद्भाव प्राप्त हुआ जिसे उसके गौरवशाली उदाहरण ने पेश किया।

8. 47 : 10-13

यहूदा ने यीशु के खिलाफ साजिश रची। उस धर्मी व्यक्ति के प्रति दुनिया की अकर्मण्यता और घृणा ने उसके विश्वासघात को प्रभावित किया। गद्दार की कीमत चांदी के तीस सिक्के और फरीसियों की मुस्कान थी।

9. 372 : 26-32

क्राइस्टियन साइंस में, सत्य का एक खंडन घातक है, जबकि सत्य का एक औचित्य है और उसने हमारे लिए जो किया है वह एक प्रभावशाली मदद है। यदि गर्व, अंधविश्वास या कोई त्रुटि प्राप्त लाभों की ईमानदार मान्यता को रोकती है, तो यह बीमार लोगों की वसूली और छात्र की सफलता में बाधा होगी।

10. 323 : 32-6

छोटे बच्चे के रूप में बनने और नए के लिए पुराने को छोड़ने की इच्छा, रेंडरर्स ने उन्नत विचार के ग्रहणशील होने का सोचा। झूठे स्थलों को छोड़ने की खुशी और उन्हें गायब देखने के लिए खुशी, - यह स्वभाव परम सद्भाव को बढ़ाने में मदद करता है। भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। "धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"

11. 52 : 23-28

ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;" और "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे।"

12. 4:5-9

हमारे मास्टर की आज्ञाओं को रखने के लिए और उनके उदाहरण का पालन करने के लिए, क्या वह हमारे लिए उचित ऋण है और उसने जो कुछ भी किया है, उसके लिए हमारी कृतज्ञता का एकमात्र योग्य प्रमाण है।

13. 5 : 15-18

मसीह के अनुयायियों ने उसका प्याला पी लिया। अभिरुचि और उत्पीड़न ने उसे भर दिया; लेकिन भगवान अपने प्यार की दौलत को समझ और प्यार में डालते हैं, जिससे हमें अपने दिन के मुताबिक ताकत मिलती है।

14. 451 : 14-18

मनुष्य उस दिशा में चलता है जिस ओर वह देखता है, और जहां उसका खजाना है, वहां उसका दिल भी होगा। यदि हमारी आशाएँ और स्नेह आध्यात्मिक हैं, तो वे ऊपर से आते हैं, नीचे से नहीं, और अतीत की तरह वे आत्मा के फल का उत्पादन करते हैं।

15. 15 : 25-30

ईसाई गुप्त सौंदर्य और आनन्द में आनन्दित होते हैं, जो दुनिया से छिपे हैं, लेकिन भगवान उन्हें जानता है। आत्म-विस्मृति, पवित्रता और स्नेह निरंतर प्रार्थना है। पेशा नहीं, अभ्यास विश्वास नहीं समझ, सर्वशक्तिमान के कान और नेक हाथ और वे निश्चय ही असीम आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

16. 249 : 8-9

आइए हम आनन्दित हों कि हम "दैवीय शक्तियों" के अधीन हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को

प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6